12.01 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

PAKISTANI MILITARY SHELLING ON THE EASTERN BORDER

SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK (Rohtak) : I call the attention of the Minister of HOME AFFAIRS (GRIH MANTRI) to the following matter of urgent pubic importance and I request that he may make a statement thereon :

'The reported heavy shelling by Pakistani soldiers in Dalu Sector of Meghalaya's Garo Hills District on 25-5-1971 as a result of which 22 persons including 9 Indian Border Security Force personnel were killed.'

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (GRIH MANTRALAYA MEN RAJYA MANTRI) (SHRI K. C. PANT) : Mr. Speaker, Sir.

On 25th May, 1971, at 4-30 A. M. Pakistani troops in strength supported by heavy mortars attacked the BSF CHECKPOST at Kilapara situated about 500 yards away from Dalu. The Border Security Force detachment fought back the attack gallantly but they were over-whelmed by the superior numbers of the Pakistani troops and the post was over-run.

I regret to inform the House that as a result of this attack, 9 BSF personnel were killed and 2 are missing. According to the information received from the Assam Government, 13 civilians were also killed and 11 injured in this attack.

However, the Border Security Force contingent at Dalu stemmed the advance of the Pakistani troops and beat them back from Indian territory.

श्री मुख्तियार सिंह मलिक : स्पीकर साहब, यह मामला बड़ा तशवीशनाक और गम्भीर दिखाई पड़ता है। हमारी गवर्नमेंट के स्पोक्समैन के मुताबिक जो अखबार-नवीसों को उन्होंने बताया — 24 ता० को 11 बजे हमारे आसाम के करीम गंज सैक्टर के बार्डर पर सूतखन्डी में पाकिस्तान वालों ने हमला किया। हमारे 13 आदमी वहां पर 4 घन्टे तक मतवातर लड़ते रहे, जिनमें से एक मारा गया और 6-7 जख्मी हुए। उन्होंने लड़ाई के दौरान मजीद मदद मयब की, लेकिन अफसोस की बात है कि उनकी कोई मजीद नहीं भेजी गई और इस कमजोरी का नतीजा यह हुआ कि ता० 25 को सुबह जब यह मामला हुआ, जैसा हम ने अपने गृह मंत्री का स्टेटमेंट सुना है—इसके अन्दर सिविलियन्ज भी मारे गये और सिक्योरिटी फोर्स के भी 9 आदमी मारे गये और उन में से दो मिसिंग हैं।

स्पीकर साहब, अगर यह कमजोरी न दिखाई जाती और हमारी सरकार इस तरह से तमाशाई की तरह से न खड़ी रहती तो यह नतीजा नहीं निकल सकता था। हमारे बार्डर्ज पर आज जो वाकयात हो रहे है, जिस तरह की काम्प्लैसैन्सी दिखाई जा रही हैं — उसका जिक्र इस हाउस में रोजाना हो रहा है और हालत यह पैदा हो गई है कि—'मरीजे इश्क को लानत खुदा की, मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। रोजाना हम यहां पर इनको कहते रहते हैं, लेकिन कोई मुनासिब इन्तजाम आज तक इस सरकार ने नहीं किया।

स्पीकर साहब, कल भी यहां पर बंगला देश की बाबत काफी जिक्र हुआ और कहा गया कि यह सरकार उसको रिकगनाइज करे। हमारे आनरेबिल समर गुहा साहब ने तो बहुत जोर दिया कि हम उन की मदद करें। आज तो हालत यह है कि हमारे अपने बार्डर्ज महफूज नहीं हैं, हमारे बी०एस०एफ० के आदमी महफूज नहीं हैं, मैं तो यही अर्ज करूंगा कि 'Physician heal thyself'. हम पहले अपनी हिफाजत का इन्तजाम तो करें। उनकी हवाई फौज 16 बार हमारी सीमाओं का उलंघन कर चुकी है और कितनी दफा उनके आदमी हमारे अन्दर घुस आये हैं। इन सारी चीजों के बावजूद आज तक हमारी सरकार इनके मुकाबले के लिए मुनासिब इन्तजाम नहीं कर सकी है।

मैं मिनिस्टर साहब से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या उन्होंने इस चीज की एन्कवायरी की है

[श्री मुख्तियार सिंह]

कि ता० 24 को 4 घन्टे तक जो हमारे जवान वहा पर लड़ते रहे और मजीब मदद तलब करते रहे, उसके बावजूद वह मदद उनको क्यो नही दी गई ?

हमारी गवर्नमट के स्पोक्समैन ने जैसा कहा है कि पाकिस्तान वाले ग्राउन्ड रूल्ज की परवाह नही करते, जब कि हम उसको स्ट्रिक्ट ली आब्जर्व करना चाहते है। कौन नही जानता कि पाकिस्तान कवायद-कानून की भाषा नही जानता, लातो के भूत बातो से मानने वाले नही है—ऐसी हालत मे क्या हमारी गवर्नमेंट ने इस चीज का कोई इन्तजाम किया है कि आइन्दा इस तरह से बी० एस० एफ० की मदद के लिये अपनी फौजो को भी वहा तैनात करे और जब कभी उन्हे जरूरत पड़े तो हमारी फौजे उनका मुकाबला करके पाकिस्तान के हिस्से मे जाकर उन का पीछा करे और उनको उसी भाषा मे जवाब दे, जिस तरह से आज वे हमारे साथ बिहेव कर रहे है।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त अध्यक्ष जी, यह सदन जानता है कि इस वक्त पूर्वोत्तर भारत मे—आसाम, मेघालय और बगाल की सीमा मे एक असाधारण स्थिति है और इस असाधारण स्थिति मे बहुत सी घटनाये हमारे सामने आ चुकी है जिनके सम्बन्ध मे स्वाभाविक है कि सदन और देश को चिन्ता है। इस के बारे मे यहा पर बहस भी हुई है और सरकार की तरफ से बयान भी आया है।

अब जहा तक सूतखण्डी मे जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा आदरणीय सदस्य ने की है, हालाकि वह एक दूसरी घटना थी। जिस घटना की आज चर्चा हो रही है, उससे उसका सम्बन्ध नही है, लेकिन अगर आप इजाजत दे तो मै उसके बारे मे भी दो शब्द कहना चाहता हूँ, क्योकि उन्होने उसकी चर्चा की है .....

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) अध्यक्ष महोदय, सूतखण्डी के बारे मे मैंने एक प्रिवलेज मोशन दिया है—डिफन्स मिनिस्टर और सिंह साहब के खिलाफ। अब या तो आप उसको स्वीकार करे या मत्री महोदय से कहे कि जब तक उनका बयान नही आता, इसके बारे मे चर्चा न करे। यह काल एटेन्शन अलग विषय पर है।

अध्यक्ष महोदय आप के मेम्बर ने उसका जिक्र किया है, वह न करते तब बात दूसरी थी। लेकिन जब उन्होने जिक्र किया है तो जवाब दिया जा सकता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी आप मेरे प्रिवलेज मोशन के बारे मे फैसला कर दीजिये। सदन को जिस बात के लिए अन्धेरे मे रखा गया है उसके बारे मे इस तरह से जवाब नही दे सकते है।

अध्यक्ष महोदय अगर फिर कोई गलत बात हो तो फिर प्रिवलेज मोशन ले आना।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त अध्यक्ष महोदय, सवाल मैने नही पूछा है मै तो जवाब देने वाला हूँ। माननीय सदस्य ने अभी यह कहा कि रीएन्फोर्समेंट वहा पर नही पहुची। मैं बतलाना चाहता हूँ सूतखण्डी मे री-एन्फोर्समेन्ट पहुची थी, बटेलियन के जो कमाण्डेन्ट थे वे खुद री-एन्फोसमेंट के साथ वहा पहुचे और जो घटना वहा पर हुई, उस स्थिति पर उन्होने काबू पाया और जो काउन्टर आफेन्सिव उन्होने उसके बाद वहा पर शुरू किया, उसी का नतीजा है कि बार्डर सिक्योरिटी फोर्स ने उस बार्डर पोस्ट पर फिर से कब्जा कर लिया। पाकिस्तान आर्मी के एक कान्स्टेबिल को भी उन्होने वहा पकड़ा। इसलिये इस मे कोई कमजोरी की या काम्प्लेसेन्सी की बात नही है। री-एन्फोर्समेन्ट वहा पहुची और उन्होने कार्यवाही की और उसी का नतीजा है कि .....

एक माननीय सदस्य दूसरे दिन कब्जा हुआ, उसी दिन नही हुआ।

अध्यक्ष महोदय : जब लड़ाई होती है तो उसमें कई बातें आती है। इस लिये अगर इस तरह से रोज प्रिवलेज मोशन आने लगें तो बात कहां खत्म होगी।

श्री कृष्णचन्द्र पन्त : अध्यक्ष जी, मेरे पास जो सूचना है, उसके अनुसार मैं कह रहा हूं। उसी दिन साढ़े चार बजे पाकिस्तान आर्मी को वहां से भगा दिया गया।

दूसरी बात मैं यही कहना चाहता हूं कि बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के लोग जो है, जो सिपाही है उन्होंने बहुत अच्छा काम वहां पर किया है। सदन को यह मालूम होना चाहिए कि उन्होने बहुत अच्छा काम किया है और यहां पर कोई ऐसी बात मै नही समझता कहनी चाहिए जिससे कि उनका मनोबल जरा सा भी कमजोर हो।

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : I do not know when the present timid posture of the Government of India against persistent Pak aggression will end because I do not know when the mouthing of the virtuous platitudes of peace, patience and toleration against Pak aggression will come to a stop. It is really a sickening scene for a nation of 55 crores to witness the ritual of sending bundles of protest notes to Pakistan and of issuing flamboyant warnings by our Defence Minister...

MR. SPEAKER : It appears he is setting himself far a long speech. I wanted him to be precise and concise in his question.

SHRI SAMAR GUHA : Please be a bit tolerant to me. I do not know if you are a bit allergic to me.

MR. SPEAKER : Not everyday, sometimes he might do it.

SHRI SAMAR GUHA : It is really a sickening scene for a nation of 55 crores to to see that it has almost become a ritual to send bundles of protest notes to Pakistan and to witness our Defence Minister issuing flamboyant statements giving warnings to Pakistan that serious consequences would follow if Pak aggression or incursion into our borders continued. These warnings are being answered not only by repeated aggression but by fresh aggression the next day.

These border incidents should be viewed not as isolated border skirmishes but as part of a pattern of Pakistan aggression against Bangla Desh as well as India. I do not know who was the official who was responsible for briefing the press yesterday when referring to this border incursion he said that the influx of refugees had diminished by 10,000, that is, from 60,000, it had come down 50,000 a day. That gentleman does not know the pattern of Pakistani atrocities; they are creating trouble and killing people with the result that millions are on the run, both minorities as well as those belonging to the Awami League. They are preventing these people from crossing the border ; as soon as they get an opportunity to do so, they will enter India in millions again.

In view of these facts, will Government take a total perspective of the pattern of Pakistani aggression or incursions against our border, and call it aggression by Pakistan against our security ? if so, despite continued and calculated violation of the ground rules by the Pak army, why are our defence forces observing these rules unilaterally ?

Secondly, instead of entrusting the task of meeting the regular Pak army to the BSF, which is equipped with only limited supplies of live arms for a limited purpose and therefore cannot adequately meet the Pak army equipped with much superior equipment and superior fire-power, will the regular Indian army be asked to meet the aggression of the regular Pak army ? if not, why not ?

Lastly, will Government issue a time-bound ultimatum to the Government of Pakistan, as was done by the late Pandit Nehru in 1950 in a situation of much lesser danger, to stop killing of the Indian citizens in Bangla Desh, stop the brutal uprooting of the people of Bangla Desh and pushing them

[Shri Samar Guha]

to India and also to stop the barbarous genocide of the people of Bangla Desh, and failing that, whether the Government of India will undertake direct action against the Pak army to defend Indian national security and save the lives, honour and properties of the Bangalis in Bangla Desh; if not, what are the alternative means of the Government to defend Indian national security as also the lives and properties of the people of Bangla Desh ?

SHRI K. C. PANT : There were two questions raised by the hon. Member. One was why the BSF is only there and why they have only light arms. The BSF is there because of the arrangements that were made and have persisted over a number of years, by which the BSF is on the border and the Army is a little behind. My hon. friend knows this arrangement.

SHRI INDRAJIT GUPTA (Alipore) : That is to be unilaterally observed by us only?

SHRI K. C. PANT : In this case they are armed with ammunition and mortars. So, the remarks that they were left here without adequate arms is not correct, and that is why in spite of the strength of the Pakistani forces, which according to my information as much more than the BSF, the BSF was able to halt them and repulse them effectively and send them back. I would request him not to question me too closely and draw his conclusions from the result.

Secondly he asked whether we would be prepared to use the Army in case our security needs it. Naturally, depending on the nature of the situation we face on the border, by the Pakistan Army.

SHRI SAMAR GUHA : I wanted to know about the ground rules, why our border forces are observing unilaterally the ground rules when they are being persistently violated by the Pakistan Army.

MR. SPEAKER : You take him to the Control Room sometime.

SHRI SAMAR GUHA : That is a very important question because a ten mile gap has been maintained between our security forces and their security forces, and they are persistently violating the ground rules. I want to know why no steps have been taken by our Government. That is an important question and it should be replied.

MR. SPEAKER : That was asked yesterday also.

SHRI INDRAJIT GUPTA : The question was asked yesterday also, but he has avoided answering it.

SHRI K. C. PANT: If my hon. friend gives some thought to the matter, he will realise that his question is better unanswered.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, अपनी आजादी के लिए संघर्ष करने वाली बंगला देश की जनता की सहायता करना तो अलग रहा, हम अपनी सीमा की रक्षा भी नहीं कर पा रहे हैं। आज वक्तव्य में बताया गया है :

> "The Border Security Force detachment fought back gallantly, but they were overwhelmed by the superior numbers of the Pakistani troops and the post was over-run."

हमारी चौकी हमें खाली करनी पड़ी। यह पहली चौकी नहीं है जोकि खाली करनी पड़ी। मैं असम के मुख्य मंत्री का वक्तव्य उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उन्होंने, हमने दो चौकियां खाली कीं, इसका हवाला दिया है। मुख्य मंत्री ने कहा है, मैं उसको उद्धत कर रहा हूँ :

> "The Chief Minister said that the Pakistani troops had captured the Indian border outpost of Sutarkandi and Jerapet'a in Karimganj sector yesterday afternoon."

हमारी बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स चौकियों की रक्षा नहीं कर पा रही है। हमारी चौकियां खाली की जा रही हैं। बौर्डर सिक्योरिटी फोर्स के लोग मारे जा रहे हैं, नागरिक गोलियों के शिकार बनाये जा रहे हैं लेकिन सरकार अभी भी यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है कि भारत पाकिस्तान के बीच में एक अघोषित युद्ध की सी स्थिति पैदा हो गयी है। युद्ध की घोषणा भले ही न हुई हो लेकिन युद्ध हो रहा है। मैं जानना चाहता हूँ कि ग्राउन्ड रूल्स से

क्या हम एकतरफा बंधे रहेंगे ? पाकिस्तान सीमा पर अपनी सेना ले आया है और वह सेना आक्रमण कर रही है जबकि हमारी सेना पीछे है। बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स के जवान कितनी भी बहादुरी से लड़ें लेकिन हम यह समझने में असमर्थ हैं कि हमारी सेना क्यों नहीं सीमा पर जा रही है ?

अध्यक्ष महोदय, 23 तारीख की शाम को गोलाबारी आरम्भ हुई और 24 तारीख तक गोलाबारी चलती रही। जिस चैकपोस्ट पर कब्जा किया गया है वह 25 तारीख को साढ़े 4 बजे कब्जा हुआ है। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या 24 तारीख को दिन भर बौर्डर सिक्योरिटी फोर्स के लोग वहाँ नही पहुँचाये जा सकते थे ? मुझे इसमें भी शक है कि साढ़े चार बजे हमला हुआ है। मेरे पास हिन्दुस्तान स्टेन्डर्ड की एक रिपोर्ट है। उनका करसपोंडेंट लिखता है :

> "Pakistani troops armed with rifles, machine guns, and mortars had intruded into Tali Bazar on the Garo Hills border of Meghalaya at about 7 a. m. today. They numbered about 100 and resorted to indiscriminate firing for about hour."

संवाददाता की जानकारी भी कुछ आधार पर होगी। उसका कहना है कि सबेरे 7 बजे हमला हुआ। हमला करने वाले केवल 100 लोग थे और मंत्री महोदय कहते है कि साढ़े 4 बजे हमला हुआ। क्या चैक पोस्ट पर हमारे इतने लोग भी नहीं थे जो 100 लोगों का मुकाबला कर सकते ? इसके बाद यह कहा गया है और मंत्री महोदय ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि 23 तारीख की शाम को गोलाबारी हो रही थी, 23 तारीख की शाम से जब गोली वर्षा हो रही थी तो मैं पूछना चाहता हूँ कि 24 तारीख को हमारी बौरडर सिक्योरिटी फोर्स क्या करती रही। मैं बोरडर सिक्योरिटी फोर्स के खिलाफ कुछ कहना नहीं चाहता हूँ। उनकी जितनी शक्ति है जितने साधन हैं उनसे वह लड़ रहे हैं लेकिन बोरडर सिक्योरिटी फोर्स को जो पर्याप्त सहायता दी जानी चाहिए वह उन्हें नहीं दी जा रही है। 24 तारीख का दिन हमने खो दिया। 24 तारीख को जब सदन में रक्षा मंत्री महोदय और पन्त जी के सहयोगी मिर्धा जी भाषण कर रहे थे उस समय सुतरकंडी (?) चैकपोस्ट पर पाकिस्तान का कब्जा था लेकिन इस के बारे में सरकार द्वारा सदन को अंधेरे में रक्खा गया और हमें विश्वास में नही लिया गया। भारत की एक इन्च भूमि भी यदि विदेशियों के कब्जे में चली जाय तो इस सदन् को सरकार को बतलाना होगा। सरकार इस बारे में असावधानी से काम नही ले सकती। एक बार चीनी हमले के बीच पण्डित नेहरू ने यह गलती की थी और उन्होंने सदन् को अंधेरे मे रक्खा था बाद मे सदन् से उनको माफी मांगनी पडी थी। अगर हम कौलिंग अटैंशन नहीं देते तो हमारी तीन चैकपोस्ट्स पर पाकिस्तान कब्जा करने मे समर्थ हुआ यह बात देश को पता नही लगती और विदेशों को भी पता नही लगता। यह हमारे हित में है कि हम पाकिस्तान की आक्रामक कार्यवाहियों का जितना प्रचार हो सकता है करे और दुनिया को बतायें कि हमारी भूमि पर हमला हो रहा है, हमारे जवान मारे जा रहे हैं, हमारे नागरिकों का कत्लेआम हो रहा है, हमें उसका जवाब देना होगा। लेकिन सरकार इस सदन् से तथ्यो को छिपाती है। सरकार इस सदन् को विश्वास में लेना नही चाहती है। देशवासियों से संकटपूर्ण परिस्थिति मे निबटने के लिए अपील की जा रही है, उन से त्याग व बलिदान करने की अपील की जा रही है लेकिन सीमा पर क्या हो रहा है। अब अगर आप सदन और देश को नहीं बतायेंगे तो देश का समर्थन कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि मंत्री महोदय सदन् से माफी माँगें सदन् को अंधेरे में रखने के लिए और यह आश्वासन दें कि एक भी हिन्दुस्तान की चौकी पर पाकिस्तान को कब्जा करने नहीं दिया जायगा और कब्जा करने से पहले ही उनको मार कर भगा दिया जायगा।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]
उसके लिए जरूरी हो तो सेना को भी भेजा जाय, सदन इस बारे मे सरकार को पूरा समर्थन देगा।

श्री कृष्णचन्द्र पंत जैसा माननीय सदस्य ने कहा मेरे स्टेटमेंट मे यह बात कही गई है कि पाकिस्तान आर्मी ने इस चैकपोस्ट को ओवररन किया। मैं यह फिर बतलाना चाहता हूँ कि इस पोस्ट मे जो चैकपोस्ट था उसमे केवल 11 आदमी थे और जो रैफ्यूजीज वगैरह आ रहे है उन के लिए वह पोस्ट रक्खी गई थी। वहा से 500 गज की दूरी पर डालू का हमारा बडा पोस्ट था। हमलावर 500 गज की दूरी तक भी नही बढ पाये बाकी उस चैकपोस्ट मे जहाँ पर केवल 11 आदमी थे उन पर पाकिस्तानी आर्मी ने हमला किया और उसको पार कर गये। चूंकि हमलावर काफी अधिक तादाद मे आये थे इसलिए उस चैकपोस्ट के 11 आदमियो के लिए उन्हे रोक पाना सम्भव नही था। मैं समझता हूँ कि चाहे वह फौज के होते या बौरडर सिक्योरिटी फोर्स के होते इतनी बडी तादाद मे हमलावर लोगों को यह 11 आदमी नही रोक सकते थे फिर भी जिस बहादुरी से वह लडे उस के लिए मै यहाँ उनकी तारीफ करना चाहता हूँ और श्रद्धाजलि अर्पित करना चाहता हूँ कि उन्होने बहुत बहादुरी से पाकिस्तानी फौजियो का मुकाबला किया। जो पीछे डालू मे बौरडर सिक्योरिटी फोर्स का कटिजेट था उसने हमलावरो को 500 गज भी नही बढ़ने दिया और पाकिस्तानी ट्रूप्स को भारतीय सीमा से खदेड कर बाहर कर दिया।

जहा तक ग्राउन्ड रूल्स का प्रश्न है आज की जैसी स्थिति है उसमें अगर हमारे ऊपर आक्रमण होगा और कही भी अपनी फौज को भेजना जरूरी समझा जायेगा तो कोई भी टैक्निकल मामला उसे भेजने मे हमको रोकने वाला नही है। जैसी भी स्थिति होगी हमे उसका जिस तरीके से सामना करना होगा वह सब किया जायेगा। भारत की एक-एक इन्च भूमि से अगर हमारे वाजपेयी जी को प्यार है तो मै यह स्पष्ट कर दूं कि हमे भी अपने देश की चप्पा-चप्पा भूमि वाजपेयी जी से कम प्यारी नही है......(**व्यवधान**)...

श्री हुकम चन्द कछवाय (मुरेना) : हमारी तीन चौकियो पर कब्जा कर लिया है। यह सरकार देश को अधेरे मे रख रही है। सदन् के साथ विश्वासघात किया जाता है...(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य को यह क्या हो गया है।

श्री कृष्णचन्द्र पंत मै यही निवेदन कर रहा था कि इस देश की भूमि हमे किसी से कम प्यारी नही है और उसकी सुरक्षा के लिए जो भी कदम उठाने पडेगे वह हम उठायेंगे। प्रधान मंत्री जी के वक्तव्य मे भी यही बात कही गयी है और मैं उसे अब फिर दुहराने की आवश्यकता नही समझता हूँ।......(**व्यवधान**)...

श्री हुकम चन्द कछवाय देश को अन्धेरे मे रक्खा जा रहा है। सरकार ने सिवाय धोखा देने के और कोई काम नही किया है...(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय मै अर्ज करूंगा कि माननीय सदस्य शान्ति से काम ले। Do you think that by shouting you gain something ? Why do you lose your temper ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी क्या मंत्री महोदय का उत्तर पूर्ण हो गया ? मन्त्री महोदय के वक्तव्य मे कहा गया है कि साढ़े 4 बजे हमला हुआ जबकि असम सरकार की रिपोर्ट है कि 7 बजे से हमला शुरू हुआ। अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूँ कि इस के बारे मे तथ्य दिये जायं। क्या असम सरकार की जानकारी अलग है और हमारी केन्द्रीय सरकार की जानकारी अलग है ?

श्री कृष्ण चन्द्र पंत : अब वाजपेयी जी बहुत नाराज हो जायेंगे अगर मैं कोई गलत बात कहूंगा इसलिए मुझे जो जानकारी है उसी के आधार पर मैं बोल सकता हू। मेरे पास जो जानकारी

है उसमें साढ़े 4 बजे सवेरे है जोकि मैं आप के सामने दे रहा हूं वरना आप कहेंगे कि मैं अन्धेरे में रख रहा हूं। मैं नहीं चाहता कि मैं सदन् को अंधेरे में रक्खूँ। मैं सदन का आदर करता हूं और इस नाते मेरा कर्त्तव्य है कि जो भी बातें मेरे इल्म में हैं वह मै सारी बातें सदन के सामने रक्खूं और यही मैने किया भी है।

श्री कमल मिश्र मधुकर (केसरिया) : मन्त्री जी ने जो बयान दिया उससे यह मालूम पड़ता है कि पाकिस्तानियों का रवैय्या दिन पर दिन हिन्दुस्तान के प्रति शत्रुता और आक्रमण का होता जा रहा है जबकि हमारा रवैय्या अभी तक एक दब्बूपन और टालने वाला दिखाई दे रहा है। सरकार के बयान से यह भी मालूम होता है कि पाकिस्तानी फौज हमारे बौरडर सिक्योरिटी फोर्स के लोगों को लगातार मार रही है और हम अपनी आर्मी को आगे नही भेज रहे है। कहने को इस सरकार की ओर से यह अवश्य कह दिया जाता है कि हम आवश्यक कार्यवाही करेंगे लेकिन अमल होता दिखाई नही पड़ता है। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार ने अपनी फोर्स को वह आर्डर दे रक्खा है कि वह पाकिस्तानी हमलावरों को भारतीय सीमा में से खदेड़ कर बाहर पीछे धकेल दें ? आखिर इसको करने में सरकार के सामने क्या कठिनाई है जिसके कि कारण इण्डियन आर्मी को इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है ? अच्छे व आधुनिक हथियारों से बौरडर सिक्योरिटी फोर्स को क्यों लैस नहीं किया जा रहा है ? इस मे कौन सी कठिनाइयां हैं। मंत्री महोदय सदन् को बतलायें कि क्यों नहीं वह अपनी आर्मी को वहां पर इस्तेमाल करने जा रहे है ? आप उसको वहां क्यों नहीं भेज रहे हैं। क्या यह लगातार चलता रहेगा ? क्या पाकिस्तानी हमले होते रहेंगे और हमारी चेक पोस्ट्स ओवर-रन होती रहेंगी ? क्या देश के स्वाभिमान को धक्का लगता रहेगा और आप चुपचाप बैठे रहेंगे ? मैं चाहता हूं कि मंत्री जी स्पष्ट बतलायें कि क्या वह आर्मी को आर्डर देने जा रहे है कि पाकिस्तानी हमले को हटाया जाय और एक-एक इंच भूमि की दृढ़ता के साथ रक्षा की जाये ?

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : इसका उत्तर तो मैं दे चुका हूं। मै ने बतलाया कि इस तरह के हथियार बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के पास है। मैं यह जरूर कह सकता हूं कि अगर वहां आर्मी जाने की आवश्यकता हुई तो वह जायेगी। (**व्यवधान**) आप जरा सावधानी से सुनें। अगर आज भी आवश्यकता हुई होगी तो सेना गई होगी। जहा भी आवश्यकता होगी वह जायेगी। आप इसके माने अपने आप निकाल सकते है। क्या आप चाहते है कि मैं हर चीज को यहां रक्खू जिस से देश का कोई फायदा नही होता ?

SHRI P. VENKATASUBBAIAH (Nandyal) : Do Government feel that these are only border skirmishes and tactics adopted by Pakistan to mislead world opinion that they are in complete possession of Bangla Desh or it is a large-scale war attempted by violating our international border ? If so, are Government aware of the fact that the Pakistan Government is massing its troops on the 620 mile border between Bangla Desh and our country ? Will Government treat this matter seriously and see that our troops are moved to the borders of Assam, Meghalaya and Tripura ?

SHRI K. C. PANT : I cannot say definitely that Pakistani troops are massing on the border. The Defence Ministry may be in a better position to give information on that. But I do not know generally speaking that because of the activities of the Mukti Fauj, inside Bangla Desh, it is not easy for the Pakistani army to disperse its troops in small numbers. When they move,

[Shri K C Pant]

they move in large columns It is difficult for them to spread themselves all over the border That is the general position About the specific question, I cannot give the answer

RE NOTICE UNDER RULE 377 AND CALLING ATTENTION

MR SPEAKER Papers to be laid

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour) Sir I have written to you for permission to raise an important matter during zero hour today It is about the press report stating that an Enquiry Commission has been set up by Bihar Government under the Commission of Inquiry Act against a Central Minister for misappropriation of lakhs

MR SPEAKER You sent the letter to me while I am sitting here and you get up without my permission I am not going to allow it You must give me a chance to study it and see whether it is possible under the rules

SHRI JYOTIRMOY BOSU Under rule 377, I have sought your permission to raise it during zero hour

MR SPEAKER I have not allowed it

SHRI S A SHAMIM (Srinagar) May I know what would constitute advance notice in this particular case ?

SHRI JYOTIRMOY BOSU I handed it over before 10 o clock

MR SPEAKER I have received it just now

SHRI JYOTIRMOY BOSU That is upto the Secretariat

MR SPEAKER I have not yet given my permission

SHRI JYOTIRMOY BOSU You did not inform me that you have not permitted it That is the usual practice

SHRI S A SHAMIM At least for the guidance of the new members, we should know what constitutes advance notice

MR SPEAKER I expect you to know the rules I cannot tell you ev rything There is a procedure laid down for it

SHRI JYOTIRMOY BOSU I have acted according to the procedure I have given a regular notice

MR SPEAKER I have not permitted you

SHRI JYOTIRMOY BOSU I was not informed of that This is a serious matter involving misappropriation

MR SPEAKER Anything said without my permission will not be recorded

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Gwalior) Are we to understand that the matter is under consideration ?

MR SPEAKER I am yet to go into it

SHRI PILOO MODY (Godhra) May I make a submisssion ? If something has been sent to you before 10 O Clock in the morning, at least the member should consider that it has been delivered to you in proper time Thereafter if the Secretariat does not give it to you till 10 minutes after 12 O' Clock, it cannot be our fault

MR SPEAKER I have already said that I will enquire about it

SHRI S M BANERJEE (Kanpur) Sir, we have given notice of a Calling Attention on the firing in Ishapur

MR SPEAKER If hon Members abruptly raise matters like this in the House my only alternative is to see that it is not recorded Anything said without my premission will not be recorded

SHRI JYOTIRMOY BOSU . Under rule 377 I have given the notice in writing. It is a very simple submission The matter has appeared in the press The prestige of the House is at stake The Minister should respect the House I am not asking